# जलवायु परविर्तन से उभयचरों को ख़तरा

## प्रलिम्सि के लयि:

जलवायु परविर्तन से खतरे में पड़े उभयचर, उभयचर, जलवायु परविर्तन, अंतरराष्ट्रीय प्रकृत संरक्षण संघ (IUCN)।

## मेन्स के लयि:

जलवायु परविर्तन से खतरे में पड़े उभयचर, संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण, पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन।

स्रोत: द हिंदू

## चर्चा में क्यों?

नेचर जर्नल में प्रकाशित **'ऑनगोइंग डकिलाइंस फॉर द वर्ल्डस एम्फीबियंस इन द फेस ऑफ इमर्जगि थ्रेट्स' (Ongoing declines for the world's amphibians in the face of emerging threats)** शीर्षक वाले अध्ययन से विश्व भर के उभयचरों के लयि विशेष रूप से जलवायु परविर्तन से प्रमुख खतरों का पता चला है।

- यह अध्ययन एम्फबियिन रेड लसि्ट अथॉरटिी द्वारा समन्वति द्वतीय वैश्वकि उभयचर मूल्यांकन पर आधारति है, जो अंतर्राष्ट्रीय प्रकृत संरक्षण संघ (IUCN) प्रजात उत्तरजीवता आयोग (Species Survival Commission) के उभयचर वशिषज्ञ समूह की एक शाखा है।
- इस मूल्यांकन में विश्व भर से **8,000 से अधकि उभयचर प्रजातयों के वलिुप्त होने के जोखमि** का मूल्यांकन कयिा गया, जिसमें 2,286 प्रजातयों का मूल्यांकन प्रथम बार कयिा गया।

## अध्ययन के प्रमुख बदि:

- **वलिुप्त होने का जोखमि:**
  - विश्व में प्रत्येक पाँच उभयचर प्रजातयों में से दो प्रजातयों के वलिुप्त होने का खतरा है।
  - विश्व स्तर पर लगभग 40.7% प्रजातयाँ खतरे में हैं जो कसिी भी प्रकार की प्रजात के लयि सबसे बड़ा प्रतशित है। इसके वपिरीत 12.9% पक्षयिों, 21.4% सरीसृपों और **26.5% स्तनधारयिों** को भी इसका खतरा है।
  - वर्ष 2004 और 2022 के बीच 300 से अधकि उभयचर प्रजातयाँ **वलिुप्त होने की कगार पर हैं**, इनमें से 39% प्रजातयों के लयि जलवायु परविर्तन को प्राथमकि खतरे के रूप में देखा जाता है।
    - उभयचर पर्यावरणीय परविर्तनों के प्रत विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं, जसिसे वे जलवायु परविर्तन के प्रभावों के प्रत संवेदनशील हो जाते हैं।
- **वलिुप्त उभयचर:**
  - वर्ष 2004 के बाद से चार उभयचर प्रजातयों को वलिुप्त प्रजातयों के रूप में उल्लेखति कयिा गया था, जसिमे कोस्टा रकिा (देश) की चरिकि हार्लेक्वनि मेंढक **(एटलोपस चरिकिनिससि)**, ऑस्ट्रेलयिा की शार्प स्नाउट डे फ्रॉग **(टौडैक्टाइलस एक्यूटरिोस्ट्रसि)** और ग्वाटेमाला की क्राउगैस्टोर माइलोमलिॉन एवं जालपा फाल्स ब्रुक सैलामैंडर **(स्यूडोयूरीसया एक्सस्पेक्टाटा)** प्रजातयाँ शामलि है।
- **संकटग्रस्त उभयचरों का सबसे बड़ी संक्रेंद्रण:**
  - संकटग्रस्त उभयचरों का सबसे व्यापक संक्रेंद्रण कैरेबयिाई द्वीपों, **मैक्सकिो और मध्य अमेरकिा, उष्णकटबिंधीय एंडीज़ क्षेत्र, भारत के पश्चमी घाट,** श्रीलंका, कैमरून, नाइजीरयिा और मेडागास्कर में पाया गया।
- **मानवीय प्रभाव:**
  - कृष, बुनयिादी ढाँचे के वकिास और अन्य उद्योगों जैसी गतविधियों के कारण आवास का वनिाश तथा क्षरण उभयचरों के लयि प्रमुख संकट बना हुआ है, **जो सभी संकटग्रस्त प्रजातयों में से 93% प्रभावति कर रहा है।**
- **रोग और अत्यधकि शोषण:**
  - **चट्रिडि कवक** के कारण होने वाली बीमारी और अत्यधकि दोहन उभयचरों की कमी में योगदान दे रहा है।
  - **वर्ष 1980 और 2004 के** बीच बीमारी और नविास स्थान के नुकसान के कारण **स्थित में 91% गरिावट आई।**
  - अवरित और अनुमानति जलवायु परविर्तन के प्रभाव अब बढ़ती चता का कारण बन रहे हैं, वर्ष 2004 के बाद से **39% स्थति में गरिावट**

**आई** है, इसके बाद निवास स्थान का नुकसान हुआ है।

- **सैलामैंडर संकट:**
  - **सैलामैंडर की हर पाँच में से तीन प्रजातियाँ** विलुप्त होने के कगार पर हैं, जिसका मुख्य कारण आवास विखंडन और जलवायु परिवर्तन है।
  - सैलामैंडर को विश्व के उभयचरों के **सबसे संकटग्रस्त समूह के रूप में पहचाना** जाता है।
    - उभयचर **को पहली बार 300 मिलियन वर्ष से भी पहले पहचाना गया था**। उभयचरों के तीन वर्ग आज भी मौजूद हैं:
      - सैलामैंडर और न्यूट्स (60% विलुप्त होने का खतरा), मेंढक व टोड (39%), तथा अंगहीन एवं सर्पीन सीसिलियन (16%)।
- **संरक्षण कार्रवाई:**
  - संरक्षणवादियों ने वैश्विक संरक्षण कार्य योजना विकसित करने, संरक्षण के प्रयासों को प्राथमिकता देने, अतिरिक्त संसाधनों को सुरक्षित करने और उभयचरों के प्रति नकारात्मक प्रवृत्ति में बदलाव लाने के लिये नीतियों को प्रभावित वाले **अध्ययन के निष्कर्षों का उपयोग** करने की योजना बनाई है।

## उभयचर:

- **परिचय:**
  - वे **एनिमेलिया जीव जगत** के कॉर्डेटा संघ के अंतर्गत आते हैं, उदाहरण के लिये, **मेंढक, टोड, सैलामैंडर, न्यूट्स, सीसिलियन आदि।**
  - ये बहुकोशिकीय कशेरुक हैं जो स्थल और जल दोनों पर निवास करते हैं।
  - ये भूमि पर विचरण करने वाले पहले समतापी जीव हैं।
    - **समतापी जीवों** को उन जीवों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो पर्यावरण में परिवर्तन के साथ अपने आंतरिक शरीर के तापमान को नियंत्रित नहीं कर सकते हैं।
  - ये फुफ्फुस और त्वचा के माध्यम से श्वसन क्रिया करते हैं।
  - उनके हृदय तीन प्रकोष्ठ के बने होते हैं।
- **महत्त्व:**
  - **पारिस्थितिक दृष्टिकोण** से उभयचरों को महत्त्वपूर्ण **पारिस्थितिक संकेतक** माना जाता है। उच्च स्तर की संवेदनशीलता के कारण उनका अध्ययन किया जाता है, जिससे उनके निवास स्थान के विखंडन, पारिस्थितिकी तंत्र के तनाव, कीटनाशकों के प्रभाव और विभिन्न मानवजनित गतिविधियों का संकेत मिलता है।
    - ये **महत्त्वपूर्ण जैविक संकेतक** हैं और पारिस्थितिक तंत्र के व्यापक स्वास्थ्य के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
  - ये **उपभोक्ता (शिकारी) और उत्पादक (शिकार) दोनों** के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उभयचर कीट खाते हैं, जो कृषि के लिये फायदेमंद है और **मलेरिया जैसी बीमारियों को नियंत्रित करने** में भी सहायता करते हैं।
  - उभयचर प्राणी **चिकित्सीय दृष्टि से** महत्त्वपूर्ण हैं। उभयचरों की त्वचा में **विभिन्न प्रकार के पेप्टाइड्स** होते हैं और ये कई मानव रोगों के लिये चिकित्सा उपचार की संभावना प्रदान करते हैं।
    - वर्तमान समय में इनका उपयोग कुछ दर्द निवारक के रूप में भी किया जाता है।

## UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

**???????????:**

**प्रश्न. भारत की जैवविविधता के संदर्भ में सीलोन फ्रॉगमाउथ, कॉपरस्मिथ बार्बेट, ग्रे-चिन्ड मिनिविट और ह्वाइट-थ्रोटेड रेडस्टार्ट क्या है? (2020)**

(a) पक्षी
(b) प्राइमेट
(c) सरीसृप
(d) उभयचर

**उत्तर: (a)**

**व्याख्या:**

- ये सभी एवियन पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा हैं।
- **सीलोन फ्रॉगमाउथ:**
  - यह एक भूरे-भूरे रंग की रात्रिचर पक्षी प्रजाति है जो पश्चिमी घाट और श्रीलंका के जंगली आवासों में पाई जाती है।
- **कॉपरस्मिथ बारबेट:**
  - इसे **क्रिमसिन-ब्रेस्टेड बारबेट और कॉपरस्मिथ** भी कहा जाता है, यह एक एशियाई बारबेट है जिसका ललाट और गला गहरे लाल रंग का होता है, इसकी आवाज़ ठीक उसी प्रकार होती है जैसी किसी लोहार द्वारा हथौड़े से धातु पर प्रहार करने से निकलती है।
  - यह भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ हिस्सों में पाया जाता है।
- **वाइट थ्रोटेड रेडस्टार्ट:**

- यह मस्कीकैपिडि समूह में पक्षी की एक प्रजाति है। यह भूटान, चीन, भारत, म्याँमार और नेपाल में पाई जाती है।

- **ग्रे-चिन्ड मिनीवेट:**
  - यह कैम्पेफैगिडि समूह में पक्षी की एक प्रजाति है।
  - यह बांग्लादेश, भूटान, कंबोडिया, चीन, भारत, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्याँमार, नेपाल, ताइवान, थाईलैंड और वियतनाम में पाई जाती है।
  - इसका प्राकृतिक आवास उपोष्णकटिबंधीय या उष्णकटिबंधीय नम तराई वाले वन हैं।

**अतः विकल्प (a) सही उत्तर है।**

---

**प्रश्न. सजीवों के विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा क्रम सही है? (2009)**

(a) ऑक्टोपस - डॉल्फिन - शार्क
(b) पैंगोलिन - कछुआ - बाज़
(c) सैलामैंडर - पायथन - कंगारू
(d) मेंढक - केकड़ा - झींगा

**उत्तर: (c)**

- विकासवादी चरणों का क्रम: एककोशिकीय → बहुकोशिकीय → मछलियाँ → उभयचर → सरीसृप → पक्षी → स्तनधारी।
  - ऑक्टोपस (मोलस्क); डॉल्फिन और व्हेल (स्तनधारी); शार्क(मछली)
  - पैंगोलिन (स्तनपायी); कछुआ (सरीसृप); बाज़ (पक्षी)
  - **सैलामैंडर (उभयचर) - अजगर (सरीसृप) - कंगारू (स्तनपायी)। यह क्रम विकासवादी चरणों के सही अनुक्रम के अनुरूप है।**
  - मेंढक (उभयचर); केकड़ा (क्रस्टेशियंस); झींगा (क्रस्टेशियंस)
- **अतः विकल्प (c) सही उत्तर है।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/amphibians-threatened-by-climate-change